# मोरंगे

जनवरी–फरवरी 2018

# इस बार


**खिड़की**

**3** शैतान चूहे

**कविताएँ**

**7** इसका सवाल–उसका सवाल
बूंदें

**8** काली–पीली / पतंग रे पतंग रे

**9** बरसात आई बरसात आई

**कहानियाँ**

**11** खरगोश की खोली

**12** आदत बन गई / घर आने दोगे

**13** खाना कौन खिलायेगा

**14** जन्नत

**15** चालाक खरगोश

**याद की धूप–छाँव में**

**16** टीचर के साथ मस्ती

**17** डर से मुकाबला

**बात लै चीत लै**

**18** खाना पकाने द्वारा शिक्षण

**19 मटरगश्ती बड़ी सस्ती**
**हीहीही–ठीठीठी**

**20 कुछ हमने बढ़ायी**

**शिमला सैनी,**
उम्र–11, समूह–खुशबू


**सम्पादन : विष्णु गोपाल**
**सहयोग :** उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
**डिज़ाइन :** अश्विनी कुमार पंकज
**प्रूफ़ :** जीवनेद्र सिंह
**वितरण :** जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – सुलोचना, गांव–रांवल
**वर्ष 8 अंक 91–92**

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

**प्रबंधन**
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

**पत्रिका का पता**
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

# शैतान चूहे

बहुत पहले की बात है। पहाड़ी के ऊपर एक पुरानी पवनचक्की थी, जो आटा पीसने का काम करती थी। चक्की बहुत पुरानी हालत में थी परन्तु समय–समय पर देखभाल, मरम्मत के कारण अच्छा काम करती थी। इस पवनचक्की को एक मालिक ने खरीद लिया। चक्की का नया मालिक बड़ा ही गुस्सैल और कंजूस था। वो चक्की की बिल्कुल देखभाल नहीं करता था और उसकी मरम्मत पर कुछ भी खर्च नहीं करता था। एक बात चक्की के मालिक को बहुत परेशान करती थी। आटे की चक्की में हजारों चूहे थे जो रात–दिन उसकी नाक में दम किए रहते थे।

**राधा मीना**, उम्र–8 वर्ष , समूह–खुशबू

उन सैकड़ों–हजारों चूहों को उस पुरानी आटा चक्की में बड़ा मजा आता था। चक्की की चरमराती मशीनों के शोर से चूहों को कोई फर्क नहीं पड़ता था। वे चक्की के बड़े गोल पत्थर पर बैठकर गोल–गोल घूमने वाले झूले यानि मेरी–गो–राउंड का आनंद लेते थे।

चूहे घूमती हुई मोटी बल्लियों पर नाचते और संतुलन के खेल खेलते थे।

चक्की का पिसा आटा एक ढ़लवा नाली से लुढ़क कर नीचे बोरों में गिरता था। चूहे इस नाली में, ऊपर से नीचे फिसलते थे और स्लाइड का मजा लेते थे।

चूहे इस पुरानी आटा चक्की से बहुत खुश थे। अक्सर रात के समय जब पूरा चाँद आसमान में खिल उठता था, जब पवनचक्की घूमना बंद कर देती थी और सारी मशीनें चरमराना बंद कर देती थीं, उस समय सारे चूहे अपने लीडर के चारों ओर

जमा होते थे। उनका लीडर एक सफेद रंग का चूहा था। वो पालतू जानवर बेचने वाली एक दुकान से भागकर आया था। सारे चूहे इकट्ठे होकर गाने–गाते, पहेलियाँ बूझते, एक–दूसरे को चुटकुले सुनाते और हँसी–मजाक करते।

चूहे बड़े होशियार थे। चक्की के मालिक को देखते ही वे झट से इधर–उधर छिप जाते थे। पर चक्की के मालिक को चूहों के पंजों के निशान आटे में साफ नजर आते थे। आटे के सभी बोरे चूहों के तेज दांतों से कुतरे हुए होते थे। चक्की के मालिक को अंधेरे में चारों ओर से चूहों के गाने की आवाजें सुनाई देती थीं।

चूहों से निबटने और उनके आतंक से छुटकारा पाने के लिए चक्की के मालिक ने एक मोटी, चितकबरी बिल्ली खरीदी। परंतु चक्की का मालिक था तो एकदम गुस्सैल और कंजूस। वो बिल्ली को कुछ भी खाने को नहीं देता था और बात–बात पर उसे दुत्कारता और ठोकर मारता था। इसका नतीजा यह हुआ कि बेचारी बिल्ली एकदम कमजोर हो गई और बहुत दुखी रहने लगी। इस कमजोरी की हालत में बिल्ली उन तेज–तर्रार चूहों में एक को भी नहीं पकड़ पाई।

चूहों को उस उदास, कमजोर, दुःखी बिल्ली को देखकर बड़ी दया आई। एक दिन सफेद चूहे ने एक बैठक बुलाई। ''बिल्ली को कसरत की सख्त जरूरत है,'' उसने कहा। ''चूहों को अब थोड़ा धीरे भागना चाहिए, जिससे कि बिल्ली को उनका पीछा करने में आसानी हो।'' ''इससे क्या फायदा होगा?'' एक मोटे, चूहे ने पूछा। ''इससे बिल्ली के साथ दिनभर मजेदार खेल खेलेंगे,'' सफेद चूहे ने किलकारी भरते हुए कहा।

यह सुनकर सभी चूहे खिलखिलाकर हंस पड़े। इसके बाद सारे चूहों ने मिलकर बिल्ली की नीरस जिंदगी में एक नया उत्साह भरा। कभी–कभी चूहे पवनचक्की के घूमते हुए पंखों पर बैठ जाते। जैसे ही वे बिल्ली की प्रिय खिड़की के सामने से गुजरते वे उसे आंख मारते और बिल्ली की ओर गंदे–गंदे मुँह बनाते। कभी चूहे ऊपर की छत से बिल्ली पर आटा फेंकते। कभी–कभी चूहों के छोटे बच्चे बिल्ली के सामने आ जाते और उसे चिढ़ाते जैसे, वो कह रहे हों, ''जरा हमें पकड़कर तो देखो।'' जैसे ही बिल्ली उनकी ओर लपकती, वे डर से कांपने लगते और थरथराने की एक्टिंग करते। इससे बिल्ली को बड़े गर्व का अहसास होता और उसका मनोबल बढ़ता। धीरे–धीरे चूहों की कोशिशें रंग लाने लगी। बिल्ली पर इनका असर साफ नजर आने लगा। अब बिल्ली खुद अपनी अधिक इज्जत करने लगी थी। एक दिन सफेद चूहे ने बिल्ली को एक टूटे हुए आइने में अपना चेहरा निहारते हुए और कुछ अभ्यास करते हुए देखा। बिल्ली चूहे पकड़ने का अभ्यास कर रही थी। बिल्ली पहले एक पेंचकस की ओर लपकी– जैसे वो कोई चूहा हो। फिर उसने पेचकस को

कसकर दबोचा। फिर बिल्ली इस अदा में बैठी जैसे कि चक्की का मालिक उसे शाबाशी दे रहा हो। यह सब देखकर सफेद चूहे को बड़ा मजा आया और वो अपनी बुलंद आवाज में चिल्लाया, ''बाप रे! यह बिल्ली तो बेहद डरावनी है! डसे देखकर ही मेरे होश उड़ गए!'' यह कहकर सफेद चूहा वहाँ से भाग लिया।

जैसे–जैसे चितकबरी बिल्ली की हालत सुधरी, वैसे–वैसे चूहे और भी खुश हुए। दिनभर चूहों को नियंत्रित रखने के बाद अब रात को बिल्ली को गहरी नींद आती। जब बिल्ली गहरी नींद सोती तब सारे चूहे इकट्ठे होकर जश्न मनाते। छोटे–छोटे चूहे सीढ़ी पर ऊपर–नीचे कूदते, धमा–चौकड़ी करते और खूब शोर मचाते। बड़े चूहे चक्की के मजदूरों के लटके कपड़े की बड़ी–बड़ी जेबों में बैठकर गप्पे लगाते। वे कहते, ''देखो अब जमाना कितना बदल गया है। हमारे बचपन की तुलना में अब के हालात कितने बेहतर हैं।''

एक दिन सफेद चूहा अपने दो दोस्तों के साथ मक्का के बोरों के ऊपर बैठकर,

**मंगल सैनी**, उम्र–7 वर्ष, समूह–कूंदन

अखबार को छोटे–छोटे टुकड़ों में कुतर रहा था। तभी अचानक उसे नीचे से बड़े जोर की आवाज सुनाई दी। उसने देखा कि चक्की का मालिक चितकबरी बिल्ली की गर्दन पकड़े उसे हवा में उठाए हुए हैं और उस पर जोर से चीख–चिल्ला रहा है। पवनचक्की की घर्र–घर्र की आवाज में भी वो चक्की मालिक के इन शब्दों को सुन पाया। ''कैसी बर्बाद बिल्ली है! जब से ये नासपीटी यहाँ आई है, चूहों की तादात व शैतानी और बढ़ी है। चलो ठीक है। आत रात को मैं इस बिल्ली को बोरे में बंद करके नदी में फेंक दूंगा।''

यह सुनकर सारे चूहे बड़े परेशान हुए और उन्होंने इसका कोई हल निकालने के लिए सफेद चूहे से प्रार्थना की। हालात कुछ ठीक होते ही, सफेद चूहा, बाकी चूहों को लेकर बाहर के उस कमरे में पहुँचा जहाँ चक्की का मालिक बिल्ली को

लेकर गया था। बेचारी चितकबरी बिल्ली को उसने एक बोरे में ठूंसकर, बोरे को कसकर बांध दिया था। सफेद चूहा बोरे के ऊपर चढ़ा और बिल्ली के कान के पास जाकर कुछ फुसफुसाया।

''सारे चूहे,'' उसने बिल्ली से कहा, ''तुमसे ये पूछना चाहते हैं–वैसे तो तुम हमारी जानी दुश्मन हो, परंतु हम नहीं चाहते कि तुम नदी में डूबकर बेमौत मरो। हम तुम्हारी यहाँ से भाग निकलने में मदद कर सकते हैं। परंतु उसके बाद तुम्हें हमारा दोस्त बनने का वादा करना पड़ेगा।''

बोरे के अंदर से चितकबरी बिल्ली ने डर से कांपते हुए हामी भरी। ''ठीक है,'' सफेद चूहे ने कहा और उसने बाकी चूहों को आदेश दिए।

सफेद चूहे के साथ, चूहों का एक दस्ता हॉल में गया। वहाँ पर हुक से चक्की की मालकिन का ऊनी फर का बना मुलायम मफलर लटका हुआ था। चूहों ने हुक पर से मफलर को उतारा। फिर वो मफलर को अपने सिरों पर लादकर बाहर के कमरे में आए। उनको वापिस पहुँचने तक चूहों के एक दूसरे समूह ने, उस रस्सी को कुतर डाला था जिससे बोरा बंधा हुआ था। बिल्ली बोरे के बाहर निकल आई थी और सुरक्षा की खुशी में हांफ रही थी। थोड़ी सी देर में चूहों ने मफलर में ढेर सारा पुआल भर दिया। कुछ दिलेर चूहे बोरे को भारी बनाने के लिए कहीं से एक घोड़े की नाफ उठा लाए। इस सब सामान को उन्होने बोरे में भर दिया और फिर रस्सी से कसकर बांध दिया। ''बेवकूफ चक्की का मालिक बोरे के फर्क को नहीं पकड़ पाएगा,'' सफेद चूहे ने हँसते हुए कहा। रात को चक्की के मालिक ने बोरे को उठाया और उसे लेकर नदी की ओर चला। सैकड़ों उत्सुक चूहे भी उसके पीछे–पीछे चले। परंतु इसका कोई आभास चक्की के मालिक को नहीं हुआ।

सारे चूहे पुल की दीवार पर बैठकर टकटकी लगाए देखते रहे। चक्की मालिक ने बोरे को पूरे जोर के साथ नदी में फेंका। ''चलो, इस नासपीटी बिल्ली का मुँह मुझे अब दुबारा कभी नहीं देखना पड़ेगा,'' चक्की मालिक ने झिड़कते हुए कहा। उसके बाद वो घर की ओर चला। चूहे भी उसके पीछे–पीछे हो लिए। चक्की के मालिक ने निर्णय लिया कि अब वो कभी भी बिल्ली नहीं पालेगा और उसने सच में कभी कोई दूसरी बिल्ली नहीं खरीदी। उसे इस बात का बिल्कुल पता नहीं था कि वो चितकबरी बिल्ली न केवल जिंदा थी परंतु पहले से कहीं अधिक खुश भी थी। वो बिल्ली अब पवनचक्की की सबसे ऊपरी मंजिल पर चूहों के साथ रहती थी। चूहे उसके खाने के लिए इधर–उधर से अनेकों स्वादिष्ट पकवान ले आते थे। बिल्ली अब दिन भर चूहों के साथ बिल्ली–चूहों का खेल खेला करती थी।

**जॉन योमैन**, भारत ज्ञान विज्ञान समिति

कविताएँ

# इसका सवाल –उसका सवाल

इसका सवाल–उसका सवाल
इसका सवाल, उसका सवाल
पूछकर करते लोग बवाल।
बाबा की दाढ़ी, दाढ़ी का बाल
इन पर बच्चे पूछे सवाल।
देख सिपाही, बंदूक की नाल
चोर भी पूछे कई सवाल।
बूंदे टपकी हुआ कमाल
हरियाली ने किया खुशहाल।

**सरोजिनी एवं अनुपम**,
शिक्षिका, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

# बूंदे

नन्हीं–नन्हीं बूंदे बरसी।
आसमान से बूंदे बरसी।
प्यारी–प्यारी, कोमल–कोमल।
नाम हैं इनका कितना प्यारा।
जगह–जगह पर ये बरसती।
पेड़ और पहाड़ों पर गिरती।
नदी और नालों में गिरती।
खेतों और बागों में गिरती।
नन्हीं–नन्हीं बूंदे बरसी।

**बलराम शर्मा**,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

**चन्द्रमुखी सैनी**, उम्र–7 वर्ष, समूह–खुशबू

**ज्योति**, कक्षा–3, राज. विद्या., अल्लापुर

**रोहित**, उम्र–10 वर्ष, समूह–बिजली

# काली–पीली

मेरी बिल्ली काली पीली
पानी से वो हो गई गीली
गीली होकर लगी काँपने
आछी आछी लगी छींकने
मैं फिर बोला कुछ तो सीख
बिना रूमाल के यहाँ ना छींक।

**पवन बैरवा**, उम्र–8 वर्ष, कक्षा–3,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

# पतंग रे पतंग रे

ऊपर ऊपर उड़ती जाती।
धागा टूटे तो गिर जाती।
सारे बच्चे इसे लूटते।
लगे हवा तो ऊपर जाती।
फिर किसी के हाथ न आती।

**विष्णु मीणा**, उदय सामुदायिक
पाठशाला कटार

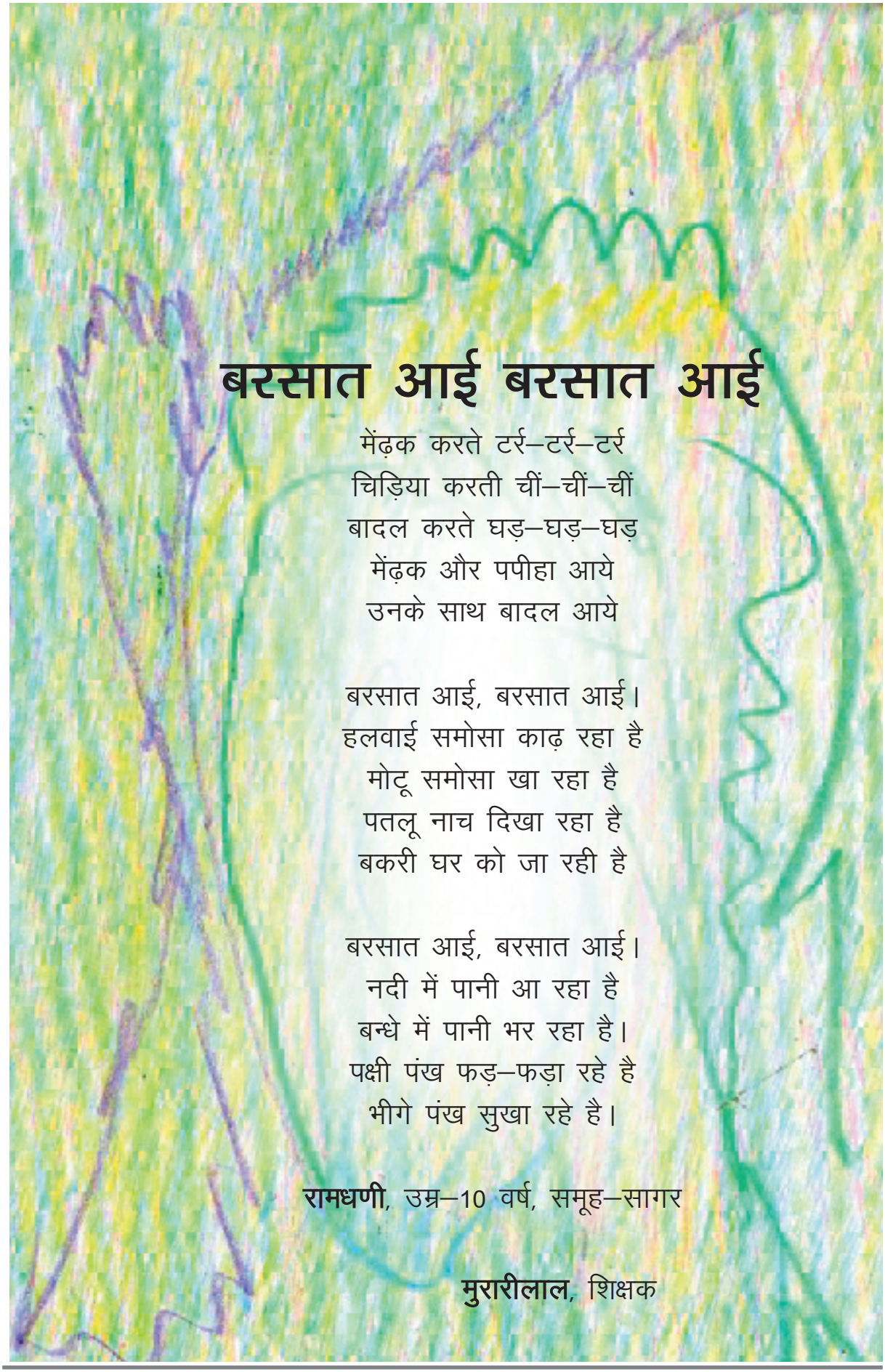

# बरसात आई बरसात आई

मेंढ़क करते टर्र–टर्र–टर्र
चिड़िया करती चीं–चीं–चीं
बादल करते घड़–घड़–घड़
मेंढ़क और पपीहा आये
उनके साथ बादल आये

बरसात आई, बरसात आई।
हलवाई समोसा काढ़ रहा है
मोटू समोसा खा रहा है
पतलू नाच दिखा रहा है
बकरी घर को जा रही है

बरसात आई, बरसात आई।
नदी में पानी आ रहा है
बन्धे में पानी भर रहा है।
पक्षी पंख फड़–फड़ा रहे है
भीगे पंख सुखा रहे है।

**रामधणी**, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

**मुरारीलाल**, शिक्षक

**भारती मीना**,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रंगोली

कहानी

# खरगोश की खोली

एक समय की बात है। एक जंगल में एक बहुत पुराना पीपल का पेड़ था। वह पेड़ बहुत ही घना था और उस पेड़ के नीचे बहुत सारे खरगोश बैठकर बात कर रहे थे।

सबसे बूढ़े खरगोश ने कहा कि, ''हम सब खरगोश क्यूँ ना इस पेड़ के नीचे ही घर बना लें, यहीं से थोड़ी ही दूर एक नदी भी है और उसके पास ही खेत भी है जिसमें बहुत सारे फल और सब्जी हैं।''

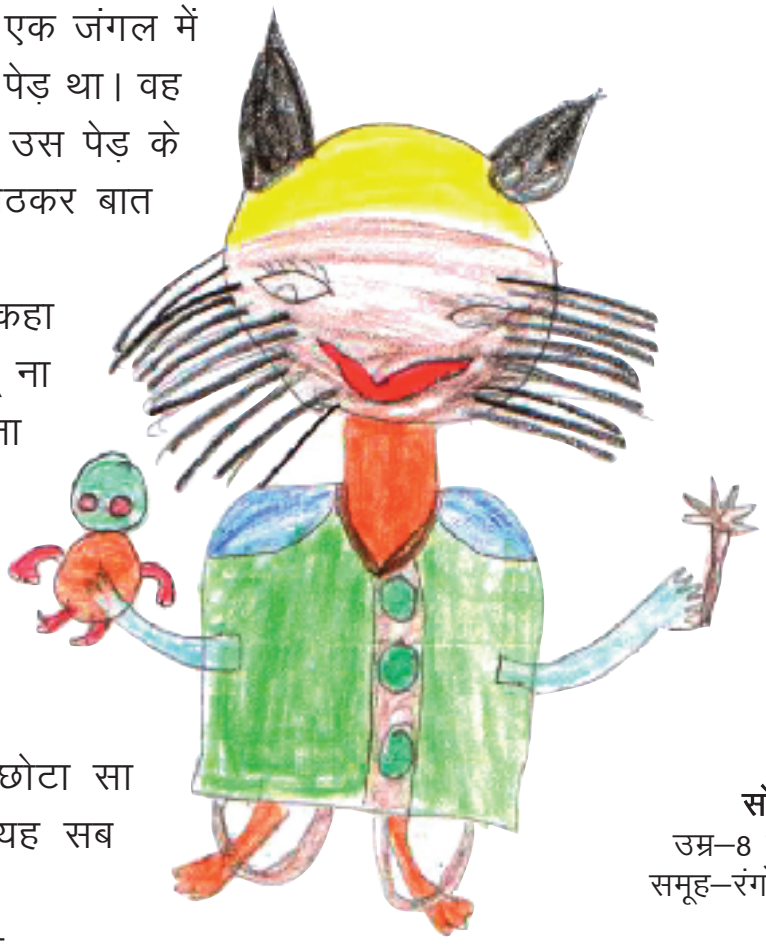

**सोना**,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–रंगोली

बूढ़े खरगोश से एक छोटा सा खरगोश बोला, ''आपको यह सब कुछ कैसे पता चला?''

बूढ़े खरगोश ने कहा कि, ''जब तुम सब यहाँ नहीं आये उससे पहले ही मैं घूमता–घूमता वहाँ चला गया था और सभी जगह पर देखकर आया हूँ।''

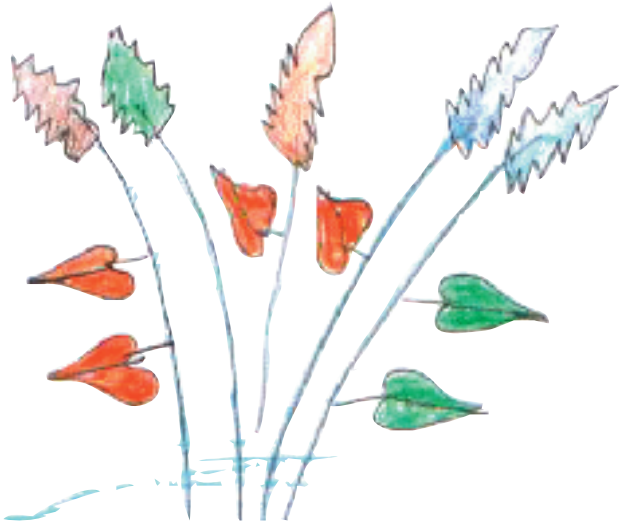

सभी खरगोश बोले, ''ठीक है, तब तो हम सब यहीं पर अपना घर बना लेंगे।'' दूसरे ही दिन उन्होंनें वहीं पर घर बना लिए और खुशी–खुशी रहने लगे।

**काजल महावर**, समूह– खेजड़ी, उम्र–11 वर्ष

# आदत बन गई

एक बार एक जंगल में दो बन्दर रहते थे। उनमें से एक बन्दर बूढ़ा और एक बंदर जवान था। कुछ दिनों तक जंगल में लगातार बारिश हुई जिससे जंगल में बाढ़ आ गई। वे दोनों बंदर बाढ़ की चपेट में आ गये और पानी में बह गये। वे बहते हुए दूर जाकर पानी से निकल कर एक शहर में पहुँच गये। यहाँ शहर का वातावरण जंगल से एकदम अलग था। जंगल में खाने की चीजें बहुत ही आसानी से मिल जाती थी। उन्हें यहाँ खाने को कुछ भी नहीं मिल रहा था। न ही कोई उन्हें खाने के लिए कुछ दे रहा था। जब वे भूख के मारे परेशान हो गये तो लोगों से खाने का सामान छीनने लगे और अपनी भूख मिटाने लगे। धीरे–धीरे इसी तरह छिनकर खाना, खाने की वस्तुओं पर झपटना, उनकी आदत बन गई।

**अशोक**, समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

**बलराम शर्मा**,
उम्र–11 वर्ष, समूह–रिमझिम

# घर आने दोगे

एक बार की बात है। एक जगह ऐसी थी जहाँ पर कोई नहीं रहता था। बस एक औरत ही रहा करती थी। घर के बाहर बारिश हो रही थी और बिजली भी चमक रही थी। उसके घर पर एक लड़की आई और उस औरत से बोली, ''आंटी, क्या आप मुझे घर के अंदर आ जाने दोगे?

वह औरत उसे घर के अन्दर बुला लेती है। वे खाना खाकर सो जाते हैं। सुबह होने पर औरत उस लड़की से पूछती है, ''बेटी, तुम्हारे माता–पिता कहाँ पर हैं?''

लड़की ने कहा, ''मेरे माता–पिता मर चुके हैं, मेरा कोई नहीं है।''

औरत लड़की से कहती है, ''आज से मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुम मेरे साथ ही रहना।''

यह सुनते ही लड़की उस औरत को गले लग जाती है। फिर वे दोनों उस घर में खुशी–खुशी रहते हैं।

**भूमिका महावर**, उम्र–10 वर्ष, समूह–बरगद

# खाना कौन खिलायेगा

एक बार एक बुढ़िया थी। उसके चार बेटे थे। वे बहुत आलसी थे। बुढ़िया के दो खेत थे। बुढ़िया ने उन खेतों में बीज बो रखे थे। बुढ़िया के खेत में छोटे–छोटे पौधे उगने लग गये। एक महिने के बाद खेत में पानी देने का समय हो गया तो बुढ़िया ने अपने बड़े बेटे से कहा, ''तू जाकर खेत में पानी दे आ।''

बेटे ने पूछा, ''पानी कहाँ से दूँगा?''

बुढ़िया ने कहा, ''पास की मोटर से दे देना।''

**ज्योति माली**,
उम्र–14 वर्ष,
समूह–पीपल

बड़े बेटे ने कहा, ''मैं तो नहीं जाऊंगा।''

बुढ़िया ने दूसरे बेटे से कहा, ''बेटा तू चला जा।''

उसने भी कहा, ''मैं तो नहीं जाऊँगा।''

बुढ़िया ने सोचा कि ये दोनों नहीं गये तो फिर वे दोनों भी नहीं जायेंगे। बुढ़िया ने अपने चारों बेटों को बुलाया और कहा, ''यदि तुमने खेत में पानी नहीं दिया तो मैं मर जाऊँगी। फिर तुम्हें खाना कौन खिलायेगा।'' फिर वे चारों जल्दी से खेत में गये और पानी देकर आ गये।

**जयसिंह मीना**, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

**ज्योति कुशवाह**, कक्षा–9, राजकीय विद्यालय, रामपुरा

# जन्नत

एक लड़के के नाम राजू था। वह पढ़ने में बिल्कुल कमजोर था। उसके अध्यापक उसे खूब डाँटते थे। उसकी मम्मी भी उसे खूब डाँटती थी लेकिन उसका पढ़ने में ध्यान लगता ही नहीं था। एक दिन वह रात को सोया हुआ था। उसे सपने में उसके अध्यापक और उसकी मम्मी आकर डाँटती है। उसकी नींद खुल जाती है। अगले दिन जब वह स्कूल में जाता है तो उसके दोस्त 'जन्नत' के बारे में बातचीत कर रहे होते हैं।

राजू उनसे पूछता है कि, "यह जन्नत क्या होती है?" उसके दोस्त उसे बताते हैं कि जिस प्रकार धरती पर महल होते है। उसी तरह बादलों में भी महल होते हैं। राजू ये बातें सोचता–सोचता घर जाता है और रात में खाना–खाकर जन्नत के बारे में सोचता–सोचता ही सो जाता है। सोते हुए उसे सपना आता है जिसमें राजू को जन्नत दिखाई देती है। वहाँ उसे बहुत सारी गाड़ियाँ, महल, आइसक्रीम की दुकानें, झरने दिखाई देते हैं। वह पानी में गिर जाता है। उसे तैरना नहीं आता जिसके कारण वह डूबने लगता है। तभी उसे एक परी आकर बचा लेती है। वह जन्नत में घूमता–घूमता जंगल में पहुँच जाता है। वहाँ उसे एक शेर दिखाई देता है तो वह शेर को देखकर भागने लगता है। वह एक गाड़ी में जाकर छिप जाता है। वह गाड़ी इतनी तेज चलती है कि राजू डर जाता है। राजू उस गाड़ी में एक बटन को दबा देता है जिससे गाड़ी रूक जाती है। वहाँ उसे कुछ अच्छी चीजें, कुछ बुरी चीजें, कुछ डरावनी चीजें दिखती हैं। राजू स्कूल में जाता है और अपने दोस्तों व शिक्षक को जन्नत के बारे में बताता है। फिर अचानक ही राजू की नींद खुल जाती है और वह उठ जाता है। वह सोचता है कि यह तो सपना था, यदि यह सच होता तो कितना अच्छा होता।

**राधिका शर्मा**, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय आवासन मण्डल

**अमर सिंह**, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

# चालाक खरगोश

जंगल में एक सियार था। वह एक दिन तालाब के किनारे पानी पीने गया। उसने सोचा कि क्यों न मैं भी राजा बन जाऊँ और राजा बनकर रहूँ। कुछ देर बाद वहाँ एक खरगोश पानी पीने आया तो सियार ने उसे रोक लिया और कहा–

''मैं यहाँ का राजा हूँ पहले मुझे प्रणाम करो, फिर पानी पीने जाना।'' खरगोश जानता था कि यह सियार बहुत ही डरपोक है और राजा बनने के लायक नहीं है। कमजोर को देखकर धौंस जमा रहा है। उसने एक तरकीब सोची।

खरगोश बोला, ''मैं बहुत थका हुआ हूँ। थोड़ी देर यहीं रूककर हवा खा लेता हूँ। फिर आपको प्रणाम करूंगा।''

थोड़ी ही देर में वहाँ बहुत सारे जंगली कुत्ते आ गये। खरगोश जल्दी से कांटों की झाड़ियों के अन्दर घुस गया। सियार उन्हें देखकर बहुत तेजी से भागा। फिर जंगली कुत्तों के चले जाने के बाद खरगोश ने बाहर निकल कर पानी पिया।

**अक्षय बैरवा**, समूह–रिमझिम, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

याद की धूप–छाँव में

# टीचर के साथ मस्ती

शनिवार का दिन था। बहुत तेज बारिश हो रही थी। कक्षा में पढ़ाई चल रही थी। पर बारिश को देखकर सारे बच्चे बाहर आ गये और सब बारिश में नहानें लगे। सभी बच्चे पानी में मस्ती कर रहे थे। पानी में बच्चे कूद–कूद कर नहा रहे थे। बच्चों ने शिक्षकों की भी नहीं सुनी। स्कूल के पीछे के लटिया नाले में बहुत तेज पानी आ गया था। उसमें बहुत सारा कचरा भी बहकर आ रहा था। लटिया नाले का पानी सड़क पर आ गया। बहुत सारे लोगों की गाड़ियाँ उसमें नहीं चल पाई।

**प्रियंका मीना**, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

नालियाँ पानी से भरी हुई थी। कुछ बच्चे पानी में नाव चलाने लगे। यहाँ तक तो ठीक था पर सारे बच्चों ने टीचर को भी पानी में भिगो दिया। टीचर नहाना नहीं चाहती थी। पर कोई उनसे डरता नहीं था। इसी लिए बच्चों ने उन्हें भी भिगो दिया।

बारिश बंद हो गई तो सारे बच्चे और टीचर घर जाकर अपने कपड़े चेंज करके वापस स्कूल आए। घर जाने से पहले हम सबने मिलकर स्कूल की साफ–सफाई की। फिर सारे बच्चे पढ़ाई करने बैठ गए। उसके बाद सारे बच्चे पीछे जाकर देखते हैं कि कोई गाय या कुत्ता तो अन्दर घुसा हुआ नहीं है। उसके बाद सारे बच्चे घर निकल जाते हैं।

**लक्ष्मी**, उम्र–13 वर्ष, समूह–शीशम, गोपाल, उम्र–11 वर्ष, समूह–खेजड़ी

# डर से मुकाबला

बात उन दिनों की है जब मैं शादी के 1 साल बाद अपने ससुराल गई। सर्दियों के दिन थे मैं रसोईघर में गैस पर खाना बना रही थी। वहाँ उस समय लाईट नहीं आ रही थी। मैंने उजाले के लिए चिमनी जला रखी थी। फिर अचानक ही ऐसी घटना घटी की जिसे देखकर मेरे हाथ–पाँव काँप उठे। चिमनी से गैस सिलेण्डर ने आग पकड़ ली और वह भभकने लगा। आग ऊँची उठने लगी। मेरे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करूँ? मेरी सास, जेठानी ने देख लिया था। पर वे भी इतने डर गये कि रसोई में घुसने की हिम्मत नहीं जुटा पाये। वे बाहर से ही देखते रहे और आग बुझाने या इसे रोकने का प्रयास भी नहीं कर सके। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी, वहीं एक बोरी और कम्बल रखा हुआ था। जिसे उठाकर मैंने सिलेण्डर पर डाला तो आग बुझ गई। मैंने राहत की सांस ली। इस तरह जीवन में पहली बार मैंने डर का सामना किया। परन्तु साहस और सूझबूझ से काम करने के कारण किसी तरह हादसा होने से बच गया।

**आशा यादव**, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

**विजय गुर्जर**,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–झरना

बात लै चीत लै

# खाना पकाने द्वारा शिक्षण

नई तालीम विद्यालय, सेवाग्राम में काम के जरिए सीखने पर अधिक जोर था। काम के द्वारा विज्ञान –शिक्षण का मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ। छात्रों को बारी–बारी से खाना बनाने की जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। स्कूल के रसोईघर में रोजाना करीब 100 लोग खाना खाते थे। खाना पकाने का जिम्मा बारी–बारी से आठ लोगों की एक टोली को सौंपा जाता था। खाने पर प्रतिमाह कितना खर्च होना चाहिए उसका बजट टोली को पहले ही से बता दिया जाता था।

आहार–शास्त्र की दृष्टि से भोजन संतुलित हो, खाना सब को पसंद आए और उसका खर्चा बजट के अंदर हो, उसकी योजना बनाते–बनाते हमारे छक्के छूट जाते थे। आलू की सब्जी सबसे सस्ती अवश्य थी, परंतु पौष्टिक तत्व के रूप में उसमें मुख्यतः स्टार्च था इसलिए उसे रोज खाना संभव न था। इंडियन काउंसिल फार मेड़िकल रिसर्च द्वारा सुझाई न्यूनतम तेल की मात्रा से तो सारा बजट केवल तेल पर ही खर्च हो जाता। एक कुशल गृहणी के अनुभव से तो हम वंचित थे। हम आहार–शास्त्र और अर्थ–शास्त्र से जूझते, मशक्कत करते हुए कोई हल खोजने की चेष्टा करते। बहुत बार भोजन की बनाई हमारी योजना बहुत कागजी होती। वास्तव में उसे बना पाना संभव ही न होता। दाल को गलने में कितना समय लगेगा, इस हिसाब में भी हम अक्सर मात खा जाते थे। फिर रात को खाने के सारे बर्तन घिसते और मांझते हुए हम अपने आपको एक घायल सैनिक जैसा महसूस करते थे। अगले दिन का खाना पकाने की समस्या मुँह बनाए खड़ी रहती थी।

लेकिन इस पूरी प्रक्रिया के दौरान हम तीन बातें अच्छी तरह सीख गए। वे थीं– आहार–शास्त्र, घर का अर्थ–शास्त्र और पाक–शास्त्र यानि खाना पकाना। धनिए के हरे पत्तों में विटामिन ए की मात्रा 10,600 यूनिट होती है, यह मुझे तीस साल बाद, आज भी अच्छी तरह याद है।

बचपन में जो चीजें मैंने कुछ दिनों में रसोईघर में काम करके सीखा, वह मैं मेडिकल कॉलेज में दस साल बिता कर भी नहीं सीख पाया। रोजमर्रा के जीवन की गतिविधियों से भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

बच्चों, आपके विद्यालय में भी बहुत कुछ नये और रोचक तरीके शिक्षण में अपनाये जाते हैं। आप भी अपने विद्यालय की बातें हमसे साझा कर सकते हैं।

**डॉ. अभय बंग**, भारत ज्ञान विज्ञान समिति

## मटरगश्ती बड़ी सस्ती

# भाषा की सहेलियाँ

# बूझो यार पहेलियाँ

1. काला–काला रहता हूँ। उधम करते ही खाता हूँ। देख मुझे सब ढूंढ़े लाठी। आधे तो डर से मर जाते और आधे मेरी मार से।
2. बीज न फूल तब भी खूब लहराऊ।
   बार–बार काटो, पर वापस ही उग जाऊँ।
3. अरी झरी को घाघरो, बलाई को नेफो,
   आई जी, ब्याई जी फाड़–फाड़ देखो।
4. जान नहीं है मुझमें मिले सहारा तो झाड़ पर, पेड़ पर, दीवार पर, खम्भे पर चढ़ जाऊं। नहीं तो जमीन पर ही बढ़ती जाऊं।– बेलड़ी।
5. एक लाठी की सुनो कहानी छिपा है उसमें मीठा पानी।

**कृष्णा मीना, दीपिका मीणा**,
उम्र– 8 वर्ष, समूह–रिमझिम

# हीहीही-ठीठीठी

1. एक बच्चा और उसकी माँ से बातें करते हुए।
   बच्चा – माँ मैं आइसक्रीम खाना चाहता हूँ।
   माँ – बेटा ठंड लग जाएगी।
   बेटा – मै पहले स्वेटर पहन लूंगा फिर आइसक्रीम खाऊँगा।

2. मरीज एक मरीज डॉक्टर के पास जाता है।
   डॉक्टर – क्या हुआ?
   मरीज – मेरी दाढ़ में दर्द है?
   डॉक्टर – मुँह खोल। मरीज मुँह खोलता है ।
   डॉक्टर – और खोल –और –खोल – और खोल...
   मरीज – क्या मेरे मुँह में बैठ कर निकालेगा।

**अनुष्का**, उम्र–6, शिवानी, उम्र–13 वर्ष, समूह–पीपल

# कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
# बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

कार्तिक, कक्षा–2, राजकीय विद्यालय, अल्लापुर

एक राजा था। वह बहुत अमीर था। उसको अपने धन पर अभिमान था। वह बहुत सारा धन रोज अपनी प्रजा में बाँट देता था। धीरे–धीरे सारी प्रजा बहुत अमीर हो गई। सभी ने बड़े–बड़े महल बना लिये थे। इसलिए सारी प्रजा उसका कहना नहीं मानती थी.....

**अरविन्द मीना,** *कक्षा–8, उम्र–12 वर्ष, समूह– बिजली, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

**सूरज भागा चँदा आया**
**सोया जंगल उल्लू जागा.....**

**विष्णु गोपाल** *द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

**माह जुलाई–अगस्त, 2017 के अंक में मीरा मीना, समूह–सावन, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा द्वारा शुरू की दी गई अधूरी कहानी को निम्न बच्चों ने पूरा करके भेजा है–**

*एक आदमी था। वह बहुत गरीब था। उसके दो पत्नियाँ थी। उस आदमी का नाम रामू था और उसकी पत्नियों का नाम केली और मूली था। दोनों हमेशा लड़ती रहती थी। रामू दोनों पत्नियों से परेशान था। रामू दोनों को बहुत समझाता था लेकिन वे दोनों नहीं समझती थी। एक दिन शाम को रामू घर आया तो उसने देखा, घर में झगड़ा नहीं हो रहा है। उसे बड़ा अच्छा लगा कि मेरे घर में कितनी शान्ति है। वह अन्दर गया तो उसने देखा की अन्दर कोई नहीं है। ....*

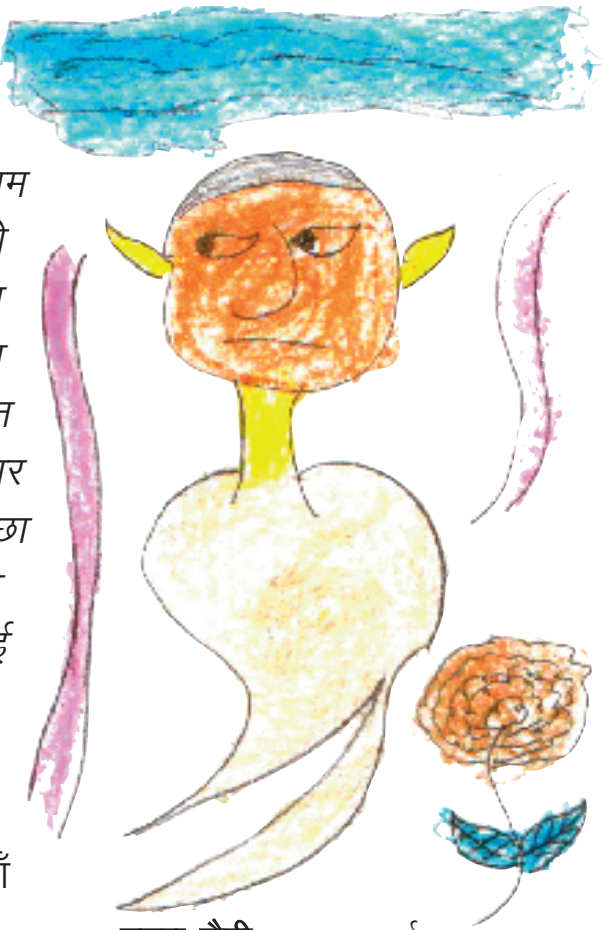

**तरुण सैनी,** उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

**काजल महावर उम्र – 11 समूह – पीपल**– ... रामू सोचने लगा, ''जब रोज घर आता था तो मुझे मेरी दोनो पत्नियाँ लडती हुई मिलती थी। आज वह दोनों लड़ती हुई भी नहीं मिली और घर में भी नहीं हैं।'' अब रामू बहुत देर तक सोचने लगा कुछ देर बाद उसकी दोनों पत्नियों में से केली घर आई रामू ने उसको देखा तो वह लाल पीला हो रही थी। रामू ने सोचा की आज दोनों में मेरे आने से पहले ही बहुत तेज लडाई हुई होगी। तभी मूली भी घर आ पहुँची। रामू ने उसे भी देखा तो वह भी गुस्से से लाल पीली हो रही थी। रामू ने उन दोनों से कहा की मैं तुम्हें रोज इतना समझता हूँ। तब भी तुम्हे समझ नहीं आता दोनों पत्नियाँ हँसने लगी। रामू ने सोचा अब यह हँस क्यों रही है। फिर रामू ने उनसे कहा, ''अब लड़ने के बाद जब मैं तुम्हें समझा रहा हूँ तो तुम हँस क्यों रही हो?'' केली बोली, ''मैं तुमसे एक सवाल पूछ सकती हूँ? रामू बोला, ''पूछो।'' उसकी पत्नी ने पूछा, ''अभी कौनसा महीना है?'' रामू बोला, ''अप्रेल'' रामू के बोलते ही दोनों पत्नियाँ चिल्ला उठी अप्रेल फूल बनाया भई अप्रेल फूल बनाया। फिर उसकी पत्नियाँ बोली, ''हम तो आज से दोस्त बन गए है। अब आप जब भी घर आओगे तो घर में लड़ाई झगड़े की बजाए खुशी पाओगे।''

**निरमा मीणा, कक्षा–7, राज.उ.मा.वि. अल्लापुर**– ... केली और मूली दोनों अपने–अपने गाँव चली गई है। दोनों पत्नियों ने अपने–अपने पिता से कहा कि वे आपस में एक दूसरे से लड़ती हैं। तो उन दोनों के पिता अपनी बेटियों से साथ रामू के पास आये। रामू ने भी यही कहा कि मैं भी इस बात से बहुत परेशान हूँ कि ये दोनों हमेशा झगड़ती रहती है। फिर उन्होंने बैठकर तय किया वे दोनों एक साथ इस घर में नहीं रहेंगी। कुछ दिनों के लिए केली अपने पिता के घर चली जायेगी तो यहाँ मूली रहेगी और मूली शिमला अपने पिता के घर चली जायेगी तो यहाँ केली रहेगी। आदमी को भी यह बात पसंद आई। फिर वे इसी तरह रहने लगे।

**भावना राय, कक्षा–7, राज.उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर**– ... केली और मूली दोनों ही अपने गाँव चली गई थी। केली जब अपने घर पहुँची तो उसने देखा कि उसके पिता जी गाय को चारा डाल रहे थे। अचानक उनकी नजर केली पर पड़ी। वे केली को देखकर तुरन्त घर के अन्दर आये और केली से पूछा कि विमला तुम

**विमला**,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–तिरंगा

आज यहाँ क्यों आई हो। केली ने कहा पिताजी राखी का त्योहार आ रहा है। इसलिए मैं दो दिन पहले ही आ गई। आपको पता नहीं कि दो दिन बाद राखी है।

**चाइना जाट, कक्षा–7, राज.उच्च माध्य. विद्या. मेईकला**– ... उसने सोचा दोनों बाजार गई होंगी। थोड़ी देर बाद जब वे वापस आई तो रामू ने पूछा, ''कहाँ गई थी?'' दोनों पत्नियों ने बताया, ''कल हमें एक शादी में जाना है इसलिए बाजार कपड़े खरीदने गये थे।'' रामू ने कहा, ''हाँ ठीक है, जाओ और जल्दी आ जाना।'' रामू ने सोचा कि शादी में जाने और कपड़े खरीदने की वजह से दोनों ने लड़ना–झगड़ना छोड़ दिया। वे दोनों शादी में चली गई। जब वे कुछ दिनों बाद वापस आई तो फिर से आपस में झगड़ने लगी। रामू उन दोनों को झगड़ते देखकर घबराकर बैठ गया।

**सपना चौधरी, कक्षा–8, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मेईकला**– ... उसने सोचा कि शायद दीपावली आ रही है इसलिए अपने मायके गई होगी। फिर वह भी उनके मायके में उनके घर चला गया और उन दोनों के पिताजी के कहा, ''आपकी बेटियाँ हमेशा आपस में लड़ती रहती हैं। मैं इनसे बहुत परेशान हो गया हूँ। कृपया आप इन्हें अपने यहाँ ही रखिये।'' यह सुनकर उन दोनों के पिता को बहुत दुःख का अनुभव हुआ। दोनों के पिता ने अपनी बेटियों से कहा, ''यदि वे आज के बाद ऐसा करोगी तो तुम हमारा मरा हुआ मुख देखोगी।'' उन दोनों पत्नियों को बहुत दुःख हुआ और उन्होंने आगे से कभी झगड़ा नहीं करने की बात कही। रामू फिर उन्हें अपने घर ले आया और वे प्रेम से रहने लगे।

**जुलाई–अगस्त, 2017 के अंक में रजनी प्रजापत, उम्र–10 वर्ष, समूह–फुलवारी द्वारा शुरू की गई अधूरी कविता को निम्न बच्चों ने पूरा करके भेजा है–**

*नाई करता रहता डाई।*
*देख उसको करते बढ़ाई।*
*जो भी अन्दर जाता,*
*चिकना होकर बाहर आता। ...*

बाल काटता कलम सजाता।
फौजी कटिंग, कटोरा कटिंग।
कभी कभी तो लोडी करता।
नाई मूँछ के बाल काटता।
नाई अच्छी कटिंग बनाता।
**बनवारी कुमार बैरवा**, कक्षा–7,
राज. विद्या. मेईकला

नाई कहता पैसा दे भाई।
आदमी कहता पैसा है नहीं।
नाई बोला पैसा देना।
आदमी कहता कल ले लेना।
**बलराम शर्मा**, समूह–रिमझिम, उम्र–11 वर्ष

**मोर**, उम्र–11 वर्ष, समूह–संगम

**पहेलियों के ज़वाब –**

1. सांप 2. घास 3. मक्का 4. बेलड़ी 5. गन्ना

**ममता साहू,** शिक्षिका

**काजल महावर,**
उम्र–12 वर्ष, समूह–पीपल